बीस बरस बाद

सुना है मैंने
नक्सली आ रहा है
अपने पांव जमा रहा है
सभी को अपने में समा रहा है

सोचा करता
शायद होती होंगी
उसकी रक्ताभ आंखें
विशालतम बाहें,
उफनता-धधकता मन
जीवन होम करने का प्रण
होगा वह सशस्त्रों का ज्ञाता
आशंका और भय की झुरझुरी से
मन मेरा कांपता

लेकिन
उस दिन
उस मासूम की आह ने मुझे बडा सताया
जब नक्सली का
मासूम रूप मेरे सामने आया
गरीबी ने था जिसे रूलाया

लेकिन
गिरा हुआ चोर कहकर
मैंने भी उसे भगाया
और
बीस बरस बाद
मैंने उसे अखबार के टुकडे में पाया
न थी उसकी रक्ताभ आंखे
विशालतम बाहें,
और
न ही था वह सशस्त्रों का ज्ञाता
देखकर उसे
मैं तुरन्त पहचान गया
यह तो मेरे पडोस का मासूम छोटू था जान गया

काश बीस बरस पहले ही मैं
उसके चेहरे को ममत्व की चमक देता
और
उसका बचपन संवार पाता
उस मासूम पर घृणा और क्रोध की अभिव्यक्ति न करता
मैं एक और नक्सली न रचता
आज गरिमामय मुख मेरा
मारे शर्म से यूँ न झुकता

काश बीस बरस पहले ही
हृदय से उसके बिंधा कांटा निकालता
उसके मन की थाह को मापता
सुबह की उजली और
शाम की रौशनी देता
बेचैन, गंभीर, चुप भाव से वह यूं न तकता
और
आज वह विष बेल न बनता
अब मैं अपने ही मन को ग्रसता
छोटेपन की बोझिलता से दबता

क्योंकि
छिपकर शायद मैं ही नक्सली गढ़ता
और
कुछ बरस बाद
फिर मैं ही चीखता चिल्लाता
कहता फिरता
सुना है मैंने
नक्सली आ रहा है
अपने में सभी को समा रहा है
नक्सली आ रहा है
नक्सली आ रहा है।

कु. स्वाति गायधने
कम्प्यूटर ऑपरेटर
वन विभाग, छ.ग, रायपुर